45/6-2012/RTI/IISS

11-86(97)

शेखर त्रिपाठी

एम0ए0, एल0एल0बी0, बी0एड0,
शिक्षक (सरदार पटेल इ0 का0 बावनबीघा, वाराणसी)
मो0 नं0 –9453222530

सेवा में,

कृषिमंत्रालय,
भारत सरकार
नई दिल्ली।

महोदय,

जनसूचना अधिकार अधिनियम 2005 के अन्तर्गत निम्न बिन्दुओं की सूचना की अपेक्षा करता हूँ–

1. भारत में कृषि योग्य भूमि कुल कितने हेक्टेयर/एकड़ है। यह भारत के कुल क्षेत्रफल का कितना प्रतिशत है। 2001 में एवं 2011 में कितना था।
2. उ0प्र0, पंजाब, हरियाणा, बिहार, महाराष्ट्र, गुजरात आदि राज्यों में कुल कितना क्षेत्रफल कृषि योग्य है। वर्तमान की स्थिति तथा पिछले दस वर्ष पूर्व की स्थिति बतायें।
3. किसानों द्वारा उत्पादित अन्न का मूल्य सरकार किस फार्मूले व नियम के प्रयोग से कीमत तय करती है। विस्तृत रूप से बताये उदाहरण देकर।
4. रासायनिक खाद भारत में सर्वप्रथम कब व किस देश से मंगाया गया। विश्व में कहाँ–2 खेती रासा. खाद से होती है।
5. रासायनिक खाद के प्रयोग से कृषियोग्य भूमि में उर्वरता बढ़ती है या घटती है।
6. खेतों में रासायनिक खादों NPK के प्रयोग से 18 प्रकार के सूक्ष्म पोषक तत्वों में कमी होती है या वृद्वि होती है।
7. जन्तुनाशक एवं कीटनाशकों के प्रयोग से पर्यावरण पर क्या प्रभाव पड़ता है। कृषि फसल को कितना प्रतिशत जन्तुनाशक एवं कीटनाशक को कितना प्रतिशत वास्तव में प्रभावित करता है।
8. रासायनिक खाद से उत्पादित अन्न एवं जैविक खाद से उत्पादित अन्न में स्वास्थ्य के लिए निरापद कौन सा अन्न है। प्रतिशत में बतायें।
9. रासायनिक खादों के प्रयोग से उत्पादित अन्न को खाने से शरीर को क्या–क्या रोग नुकसान या हानि पहुँचता है।
10. D.T.T. का प्रयोग भारत में किस उद्देश्य से होता है। विश्व के अन्य देशों में क्यों प्रतिबन्धित है। (PP-1)
11. भारत में कृषि हेतु रासायनिक खादों के प्रयोग हेतु भारतीय कृषि वैज्ञानिकों से अनुसंधान क्या कभी करवाया गया है। अनुसंधान के निष्कर्ष क्या रहे है तथा किन–किन कृषि वैज्ञानिकों ने शोध किया है।
12. कृषि भूमि में किसानों के मित्र जीव एवं मित्र कीट होते है। रासायनिक खाद के प्रयोग से क्या प्रभाव पड़ता है। इस बिन्दु पर कभी शोध रिपोर्ट प्रकाशित की गयी है। इसका क्या निष्कर्ष रहा है।
13. एक एकड़ में रासायनिक खाद के प्रयोग से अधिकतम धान, गेहूँ व गन्ना कितना उत्पादित किया जा सकता है तथा जैविक खाद के प्रयोग से अधिकतम कितना उत्पादित किया जा सकता है। आंकड़ा प्रस्तुत करें।

INM (MS. Dhadwal) – 4
INM (H. P. Singh) – 5, 6 –do–
PP-I → 7
INM (J. P. Choudhary) – 8, 11–13
E&S, E 8.5
Recd Today (PP-I) 30/5 SLP

दिनांक: 26-03-2012.

निवेदक

सुधांशु शेखर त्रिपाठी

(सुधांशु शेखर त्रिपाठी)
4 बी/12 आवास विकास
कालोनी पाण्डेयपुर
वाराणसी

29/3 Sh P

संलग्नक:

1. जनसूचना अधिकार हेतु निर्धारित शुल्क–10 रू0 भा0पो0नं0: ~~02F274453~~

पुनः दिनांक-26 मई 2012 को प्रेषित

45/6-2012/RTI/IISS

भारतीय मृदा विज्ञान संस्थान
नबीबाग, बैरसिया रोड, भोपाल–38

By Regd. Post

मि. स. IISS/RTI/2012 दिनॉक: 27.06.2012

सेवा में,

श्रीमान सुधांशु शेखर त्रिपाठी,
4 बी/12 आवास विकास,
कालोनी पाण्डेयपुर,
वाराणसी (यू. पी.)

विषयः सूचना के अधिकार अधिनियम 2005 के तहत जानकारी प्राप्त करने बावत्।
संदर्भः आपके पत्र दिनांक 31.05.2012

महोदय,

उपरोक्त विषयान्तर्गत आपके द्वारा पूछे गये बिन्दुओं कमांक 11,12,13 के सम्बंध में हमारे संस्थान के वैज्ञानिक डॉ ऐ. के. विश्वास, प्रधान वैज्ञानिक एवं विभागाध्यक्ष के द्वारा दिया गया जबाव इस पत्र के साथ संलग्न किया जा रहा हैं।

(डॉ आर. इलान्चीजियान)
प्रधान वैज्ञानिक एवं
लोक सूचना अधिकारी

प्रतिलिपिः– श्री पी.पी विश्वास, लोक सूचना अधिकारी (वैज्ञानिक एवं तकनीकी), भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, कृषि अनुसंधान भवन–2, पूसा, नई दिल्ली–110 012 के पत्र कमांक 1(3)/2011 –SW&DF दिनांक 18 जून 2012 के सम्बंध मे सूचना हेतु प्रेषित है।

Note

Date :- 27/6/12

Kindly find enclosed herewith the information/reply to the scientific RTI query on points 11, 12 and 13 for your information, perusal and furtherance.

APIO

[signature] 27/6/12
(A K Biswas)

11. भारत में कृषि हेतु रासायनिक खादों के प्रयोग हेतु भारतीय कृषि वैज्ञानिकों से अनुसंधान क्या कभी करवाया गया है। अनुसंधान के निष्कर्ष क्या रहे है तथा किन–किन कृषि वैज्ञानिकों ने शोध किया है।

कृषि में रासायनिक उर्वरकों के उपयोग पर भारतीय वैज्ञानिकों ने काफी कार्य किया है। वास्तव में हरित क्रान्ति की सफलता का श्रेय उच्च उत्पादन वाले बीजों के अलावा रासायनिक उर्वरकों को जाता है। राज्य कृषि विश्वविद्यालयों एवं भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के संस्थानों के मृदा एवं कृषि रसायन विभाग एवं शष्य विज्ञान विभाग कृषि में रासायनिक उर्वरकों के प्रयोग के प्रभाव पर अनुसंधान कार्य कर रहे हैं। फसलों की उपज, उनकी गुणवत्ता और पर्यावरण पर रासायनिक उर्वरकों के दीर्घकालीन प्रभाव को देखने के लिए सन् 1970 से देश में दीर्घकालीन उर्वरक परीक्षण पर एक अखिल भारतीय समन्वित अनुसंधान परियोजना कार्यरत है। इस परियोजना कुछ मुख्य परिणाम निम्नवत है।

अ) फसल उत्पादकता बढ़ाने के लिए उर्वरक एक महत्वपूर्ण आदान हैं

ब) केवल लगातार अकेले नाइट्रोजन के प्रयोग से टिकाऊ उत्पादकता प्राप्त नहीं की जा सकती है।

स) लागातार टिकाऊ उच्च उत्पादकता प्राप्त करने के लिए मिट्टी परीक्षण के आधार पर एन पी के का संतुलित एवं इष्टम प्रयोग आवश्यक है।

द) अत्यधिक एन पी के प्रयोग वाले क्षेत्रों में कुछ वर्षों बाद सूक्ष्म पोषक तत्वों एवं गौड़ पोषक तत्वों की कमी उपज को सीमित करने वाले कारक के रूप में उभरकर सामने आयेगी अतः टिकाऊ उच्च उत्पादन प्राप्त करने के लिए इन तत्वों को प्रयोग आवश्यक है।

ड) एन पी के और गोबर की खाद के संतुलित एवं इष्टतम प्रयोग से अच्छी और टिकाऊ उपज प्राप्त की जा सकती है एवं सूक्ष्म एवं गौड़ पोषक तत्वों तथा मृदा अम्लता की समस्या से भी छुटकारा पाया जा सकता है।

12. कृषि भूमि में किसानों के मित्र जीव एवं मित्र कीट होते है। रासायनिक खाद के प्रयोग से क्या प्रभाव पड़ता है। इस बिन्दु पर कभी शोध रिपोर्ट एकाशित की गयी है। इसका क्या निष्कर्ष रहा है।

गुन्टूर (आन्ध्र प्रदेश) की वर्टीसोल मृदा पर उर्द–धान फसल चक्र प्रणाली के अर्न्तगत उच्च उर्वरक एवं कीटनाशकों के प्रयोग का प्रभाव देखा गया। सूक्ष्म जीवों की संख्या, पोषक समूहों, कार्यात्मक समूहों और मृदा एंजाइमों के संदर्भ में मिट्टी के जैविक स्वास्थ्य के विश्लेषण से पता चलता है कि नियंत्रण की तुलना से उर्द की फसल में रासायनिक उर्वरकों एवं अन्य कृषि रसायनों की दोगुनी मात्रा के प्रयोग का कोई विपरीत प्रभाव नहीं देखा गया। परन्तु मिर्च की फसल में अत्यधिक मात्रा के प्रयोग (5 गुणा अधिक) से फन्जाई एवं एक्टीनोमाइसिटीस की संख्या, अमीनोफाइर्स प्रोफाइल एवं जैव विविधिता पर प्रभाव देखा गया। इस अनुसंधान के परिणाम दर्शाते है कि रासायनिक उर्वरकों एवं कीटनाशकों की अनुशंषित मात्रा के प्रयोग से मृदा स्वास्थ्य पर कोई विपरीत प्रभाव नहीं पड़ता है।

13. एक एकड़ में रासायनिक खाद के प्रयोग से अधिकतम धान, गेहूँ व गन्ना कितना उतपादित किया जा सकता है तथा जैविक खाद के प्रयोग से अधिकतम कितना उत्पादित किया जा सकता है। आंकड़ा प्रस्तुत करें।

फसलों की उपज जलवायु कारकों, मृदा कारकों, मृदा उर्वरता तथा अन्य शष्य कियायें जैसे उत्पादन का तरीका, फसल का चुनाव एवं किस्म, बुआई की विधि एवं समय और खरपतवार नियंत्रण आदि से प्रभावित होती है। उपरोक्त सभी कारक फार्म की उत्पादकता स्तर को प्रभावित करते है। इन सभी से ऊपर रासायनिक उर्वरक प्रभावी भूमिका अदा करते है। केवल जैविक उर्वरकों का प्रयोग से यद्यपि शुरूआती वर्षों में कम उपज प्राप्त होती है लेकिन बाद के समय में उपज बढ़ जाती है। रासायनिक उर्वरकों की अनुशंषित मात्रा के प्रयोग से धान की उपज 1.6–2.0 टन/एकड़, गेंहूँ की उपज 1.4–2.2 टन/एकड़ और गन्ना की उपज 22.8 टन/एकड़ (उत्तरी क्षेत्र), 32.7 टन/एकड़ (दक्षिणी क्षेत्र) रासायनिक उर्वरकों के प्रयोग से प्राप्त की जा सकती है। सिद्धांततः जैविक पोषक प्रबन्धन से भी समान उपज प्राप्त की जा सकती है, वशर्ते पोषक तत्वों की आवश्यक मात्रा समान रूप से प्रयोग की जाय और पोषक तत्वों का निष्कर्षण और उनकी उपलब्धता फसलों की आवश्यकतानुसार हो।